विचार बिन्दु

कार्य ही सफलता की बुनियाद है। –पाब्लो पिकासो

साहित्य में सन्नाटा : दो साल से अकादमियों का पुनर्गठन नहीं

स्वस्थ, रचनात्मक और सुसंस्कृत समाज की स्थापना के लिए शिक्षा, साहित्य, कला संगीत और भाषा की बेहतरी बहुत ज़रूरी है। देश और प्रदेश में सर्वांगीण विकास के साथ साहित्य – संस्कृति का उन्नयन मानव की बेहतर जिंदगी के लिए आवश्यक है। इसे ध्यान में रखते हुए साहित्य, कला, भाषा और संगीत अकादमियों का गठन किया गया था। मगर धीरे-धीरे ये संस्थाएं सरकारी बेरुखी का शिकार होती गई। सरकारें बदलती गई मगर इस दिशा में कोई अपेक्षित सुधार परिलक्षित नहीं हुआ। हम बात कर रहे है राजस्थान की जहां सरकारी बेरुखी साहित्य, कला, भाषा और संगीत अकादमियों पर भारी पड़ रही है। लगता है सरकारों ने साहित्य, संस्कृति और कला से अपना मुंह मोड़ लाया है। इसका एक ताज़ा उदाहरण राजस्थान है। पिछली गहलोत सरकार का अनुसरण करते हुए वर्तमान भजन लाल सरकार ने भी इस दिशा में अपनी कोई रूचि प्रदर्शित नहीं की है। राज्य में भजन लाल शर्मा सरकार के गठन के दो साल बाद भी प्रदेश की साहित्य कला, भाषा और संस्कृति के उन्नयन के लिए गठित एक दर्ज़न से अधिक अकादमियों में सन्नाटा पसरा है। अकादमियों में व्याप्त इस सन्नाटे को अगर जल्द नहीं तोड़ा गया तो इसका असर बहुत गहरा होगा। राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने गत वर्ष मुख्यमंत्री भजनलाल को एक खुला पत्र लिखकर राज्य की साहित्यिक और सांस्कृतिक अकादमियों की बदहाल स्थिति पर चिंता जताई। उन्होंने अकादमियों को पुनः सक्रिय करने और साहित्यकारों-कलाकारों के सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए 20 महत्वपूर्ण सुझाव पेश किए हैं। इस पत्र पर आज तक कोई संज्ञान नहीं लिया गया।

देखा जाता है समय समय पर सरकार के मुखिया अपने भाषणों में साहित्य और संस्कृति केउन्नयन की बात जोर-शोर से करते रहते है मगर असल में सरकार का साहित्य और संस्कृति से कोई लेना देना नहीं है। इसका ज्वलंत उदाहरण राजस्थान का लिया जा सकता है। हो सकता है अन्य सरकारों का भी यही रवैया हो। साहित्यकार भी संतोषजीवी है। वे अपने अधिकारों के प्रति सजग और सतर्क नहीं है। यही कारण है कि सरकारों का रवैया साहित्य के प्रति कभी अनुकूल नहीं होता। साहित्य और साहित्यकार किसी सरकार के प्रश्रय और मोहताज़ नहीं होते है। सत्य और तथ्य को बेलाग उद्घाटित करना रचनाधर्मिता है। साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से समाज हित में सामाजिक मूल्यों और सम्वेदनाओं को दृष्टि प्रदान करते हैं। संघर्ष पथ के राही के रूप में जीवन मूल्यों को प्रशस्त करते हुए दीनहीन की आवाज को बुलन्द करते हैं। शोषण विहीन समाज की स्थापना में साहित्य का अहम योगदान है। साहित्यकार समाज में जनजागरण का कार्य करते हैं। आज यही साहित्य सरकारों के कोपभाजन का शिकार है।

राज्य में भजन लाल शर्मा सरकार के गठन के दो साल बाद भी प्रदेश की साहित्य कला, भाषा और संस्कृति के उन्नयन के लिए गठित एक दर्ज़न से अधिक अकादमियों में सन्नाटा पसरा है। अकादमियों में व्याप्त इस सन्नाटे को अगर जल्द नहीं तोड़ा गया तो इसका असर बहुत गहरा होगा। गहलोत सरकार के दौरान गठित अध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी सरकार के एक आदेश से हटाए जा चुके है। मगर भजन लाल सरकार एक लम्बे अर्से बाद भी अब तक इन अकादमियों को पुनर्गठित नहीं कर पायी है जिससे सम्बंधित सभी प्रकार की गतिविधियां ठप्प पडी है। कला, संस्कृति और साहित्य के बिना जीवन अधूरा है। इसीलिए किसी भी देश, प्रदेश, सरकार और समाज को वहां की संस्कृति, कला साहित्य को बढ़ावा देने के लिए समुचित प्रयास करने होंगे। राज्य सरकार की अकादमियों के प्रति इस बेरुखी से प्रदेश भर के साहित्य और संस्कृति कर्मियों में भारी रोष व्याप्त है। एक जानकारी के मुताबिक राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान ललित कला अकादमी, राजस्थान साहित्य अकादमी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, राजस्थान उर्दू अकादमी, राजस्थान सिंधी अकादमी, राजस्थान संस्कृत अकादमी, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी एवं राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, बाल साहित्य अकादमी, पंजाबी अकादमी, आदि प्रशासनिक अधिकारियों के हवाले है। अध्यक्ष, सचिव और सदस्यों की नियुक्तियां नहीं होने से प्रशासनिक अधिकारियों के भरोसे चल रही अकादमियां कलाकारों और विद्वानों के लिए पुरस्कार समारोह के आयोजन, ग्रंथों के प्रकाशन के साथ ही नीतिगत निर्णय नहीं ले पा रही हैं। पिछली गहलोत सरकार के दौरान भी कई वर्षों तक अकादमियों में नियुक्तियां नहीं हुई थी। इन स्वायत्तशाषी संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य, क्षेत्रीय भाषाओं और लोक साहित्य का संरक्षण, कलाकारों, लेखकों और साहित्यकारों को प्रोत्साहन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, नाट्यय महोत्सवों का आयोजन, पारंपरिक लोककलाओं को आधुनिक मंच देना, युवा पीढ़ी में रुचि और चेतना पैदा करना हैं। राज्य सरकार की उपेक्षा के कारण कलाकारों, शोधार्थियों और संस्कृति क्षेत्र से जुड़े लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इससे कला, साहित्य, भाषा, संगीत और संस्कृसत‍ि से जुड़ी अकादमयों के कार्य प्रभावति हो रहे हैं। इन संस्थाओं के लेखकों और कला प्रेमियों के जुड़े होने से नराशा का सामना करना पड़ रहा है।

> **कला, संस्कृति और साहित्य के बिना जीवन अधूरा है। इसीलिए किसी भी देश, प्रदेश, सरकार और समाज को वहां की संस्कृति, कला साहित्य को बढ़ावा देने के लिए समुचित प्रयास करने होंगे। राज्य सरकार की अकादमियों के प्रति इस बेरुखी से प्रदेश भर के साहित्य और संस्कृति कर्मियों में भारी रोष व्याप्त है।**

राजस्थान अपनी आन, बान, शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। कला, साहित्य और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि विश्व में अपनी अलग पहचान रखती है। राजस्थान को भारतीय संस्कृति का गौरव कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य, लोकगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प, वीर-प्रथाएँ, लोक कथाएँ और बोलियाँ – ये सभी भारत की विविधता में एकता का भव्य उदाहरण हैं। यहाँ ढोला-मारू की प्रेमगाथा है, तेजाजी महाराज की लोक आस्था है, मांड और पिंगल जैसी काव्य विधाएँ हैं। मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी आदि क्षेत्रों की अपनी-अपनी सांस्कृतिक पहचान है। राजस्थान की कला और संस्कृति विश्वभर में प्रसिद्ध है। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं से पूरी दुनिया प्रभावित है। राजस्थान साहित्य और संस्कृति के साथ त्योहारों और मेलों के लिए विश्व विख्यात है जो आमजन को कोई न कोई सन्देश देते है। इस सांस्कृतिक सम्पदा को संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य अकादमियों, संस्कृति विभागों और साहित्य संस्थानों का होता है। लेकिन जब वही संस्थान निष्क्रिय हो जाएँ या खाली पड़े हों, तो यह सम्पदा दम तोड़ने लगती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि अकादमियों में बिना भेदभाव के योग्य साहित्यकार, लेखक, संस्कृतकर्मी और कलाकारों की नियुक्ति की जाये ताकि नए प्रतिभाशाली लोगों को उनका समुचित सम्मान और प्रोत्साहन मिले।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 28 फरवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, पुर्नवसु नक्षत्र प्रातः 9:35 तक, सौभाग्य योग सायं 5:02 तक, बव करण प्रातः 9:38 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन 9:35 तक है। आज गोविन्द द्वादशी जयन्ती महाद्वादशी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:22 से 9:48 तक, चर 12:40 से 2:05 तक, लाभ-अमृत 2:05 से 4:57 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:56, सूर्यास्त 6:23

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक विवादों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मकर
घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मीन
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी का अजमेर आगमन

राजस्थान के संकल्प को नई ऊर्जा प्रदान करने का प्रेरक अवसर

अरुण चतुर्वेदी

राजस्थान की वीर भूमि और अजमेर की पावन धरा, आज एक ऐतिहासिक क्षण की साक्षी बन रही है। विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अजमेर आगमन विकसित राजस्थान के संकल्प को नई ऊर्जा प्रदान करने वाला प्रेरक अवसर है।

आज राजस्थान में 16,686 करोड़ की परियोजनाओं की अभूतपूर्व सौगात दी जा रही है। इन परियोजनाओं में पेयजल, विद्युत, अक्षय ऊर्जा, सिंचाई, सीवरेज और शहरी आधारभूत ढांचे से जुड़े अनेक कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण शामिल हैं। इस अवसर पर आयोजित 'रोजगार उत्सव' मे 21 हजार 863 युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किए जा रहे हैं। साथ ही सामाजिक सुरक्षा पेंशन की 1000 करोड़ रुपए की राशि का हस्तांतरण किया जाएगा। प्रधानमंत्री प्रदेश की 9 से 14 वर्ष की बालिकाओं के लिए एचपीवी टीकाकरण अभियान का भी शुभारंभ करेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी के विजन 2047 ने राज्यों को संसाधन उपलब्ध कराने के साथ ही स्पष्ट लक्ष्य और दीर्घकालिक दृष्टि भी दी है। उनकी इसी प्रेरणा से राजस्थान ने विगत दो वर्षों में विकास की तीव्र गति पकड़ी है। केंद्रीय बजट 2026-27 में राजस्थान को केंद्रीय करों में हिस्सेदारी के रूप में 90,445 करोड़ रुपए प्राप्त हुए हैं। यह गत वर्ष की तुलना में 6,505 करोड़ रुपए अधिक है।

इन संसाधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार ने 6,10,956 करोड़ रुपए का ऐतिहासिक बजट प्रस्तुत किया है। इसमें पूंजीगत व्यय और सामाजिक क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है। मरुस्थलीय प्रदेश के लिए जल सुरक्षा सदैव सर्वोच्च प्राथमिकता रही है।

प्रधानमंत्री मोदी की संवेदनशीलता से राम जल सेतु लिंक परियोजना और यमुना जल परियोजना को मिली गति से जल समस्याओं के स्थाई समाधान का मार्ग प्रशस्त होगा। जल जीवन मिशन को मिली राष्ट्रीय प्राथमिकता और केंद्र से बढ़े आवंटन के चलते लाखों ग्रामीण परिवारों तक नल से जल पहुंचाया जा सकेगा।

राष्ट्रीय राजमार्गों, रेल परियोजनाओं और लॉजिस्टिक्स कॉरिडोर में केंद्र के निवेश तथा राज्य स्तर पर 53,978 करोड़ रुपए के पूंजीगत प्रावधान ने प्रदेश की कनेक्टिविटी को नई ऊर्जा प्रदान की है। यह निवेश औद्योगिक विकास और कृषि उत्पादकता दोनों को गति प्रदान कर रहा है।

राजस्थान की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा जनसंख्या है। गत दो वर्षों में राज्य सरकार ने पारदर्शी और समयबद्ध भर्ती प्रक्रिया को प्राथमिकता दी है। अब तक विभिन्न विभागों में एक लाख से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किए जा चुके हैं। लगभग डेढ़ लाख पदों पर भर्ती प्रक्रियाधीन है। भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने के लिए राजस्थान स्टेट टेस्टिंग एजेंसी की स्थापना और ऑनलाइन परीक्षा केंद्रों का विस्तार किया किया जा रहा है।

आगामी वर्ष के लिए राज्य सरकार ने कैलेंडर जारी कर भर्ती की स्पष्ट समय सीमा निर्धारित की है। इसमें शिक्षकों, पुलिस कर्मियों, स्वास्थ्य कर्मियों, तकनीकी सहायकों और विभिन्न प्रशासनिक पदों की भर्ती का विस्तृत कार्यक्रम शामिल है।

हमारा लक्ष्य पांच वर्षों में चार लाख सरकारी नौकरियों का सृजन सुनिश्चित करना है। यह रोजगार प्रदान करने के साथ ही युवाओं के आत्मविश्वास का पुनर्निर्माण है। केंद्र की स्किल डेवलपमेंट और स्टार्टअप योजनाओं के साथ समन्वय कर कौशल उन्नयन कार्यक्रमों का विस्तार करने से सरकारी नौकरियों के साथ-साथ निजी क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं।

राइजिंग राजस्थान निवेश शिखर सम्मेलन ने प्रदेश की आर्थिक दिशा को नई गति प्रदान की है। हमारी सरकार के कार्यकाल के पहले वर्ष में आयोजित इस पहल के अंतर्गत 35 लाख करोड़ रुपए के एमओयू हस्ताक्षिरत हुए। इनमें ऊर्जा, विनिर्माण, पर्यटन, लॉजिस्टिक्स, आईटी और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में निवेश प्रस्ताव शामिल हैं। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन एमओयू में से 8 लाख करोड़ रुपए के एमओयू धरातल पर उतर चुके है।

औद्योगिक इकाइयों की स्थापना, भूमि आवंटन, निर्माण कार्य और उत्पादन आरंभ होने की प्रक्रियाएं तेजी से आगे बढ़ रही हैं। अनेक परियोजनाओं में कार्य प्रारंभ हो चुका है। इनसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों रोजगार सृजित हुए हैं। निवेश प्रस्तावों को समयबद्ध स्वीकृति देने, सिंगल विंडो प्रणाली को सुदृढ़ करने और औद्योगिक अवसंरचना विकसित करने के कारण निवेशकों का विश्वास बढ़ा है। निजी क्षेत्र में दो लाख से अधिक रोजगार अवसरों का सृजन इस समन्वित नीति का प्रत्यक्ष परिणाम है।

प्रदेश में शिक्षा बजट में 35 प्रतिशत वृद्धि कर लगभग 69,000 करोड़ रुपए का प्रावधान युवाओं के भविष्य में निवेश है। प्रदेश के 400 विद्यालयों को सीएम राइज मॉडल में उन्नत करना और प्रत्येक जिले में बालिका छात्रावास स्थापित करना गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में 32,526 करोड़ रुपए का प्रावधान, जयपुर के जेके लॉन हॉस्पिटल में 500 बेड का आईपीडी टावर और आरयूएचएस में 200 बेड की बाल चिकित्सा सुविधा चिकित्सा आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूहों की ऋण सीमा में वृद्धि और लखपति दीदी जैसी योजनाएं आर्थिक आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त करेगी।

राजस्थान ने वर्ष 2047 तक अपनी अर्थव्यवस्था को 4.3 ट्रिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। राज्य की जीएसडीपी 21.52 लाख करोड़ रुपए तक पंहुचने का अनुमान और प्रति व्यक्ति आय का दो लाख रुपए से अधिक होना इस दिशा में सकारात्मक संकेत है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय संकल्प में भागीदारी सुनिश्चित करने का यह विनम्र प्रयास है। बीते दो वर्षों में केंद्र और राज्य की कल्याणकारी योजनाओं के परिणामस्वरूप विकास की गति दोगुनी हो रही है। बढ़े हुए केंद्रीय संसाधन, पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया, स्पष्ट भर्ती कैलेंडर, धरातल पर उतरते एमओयू और निवेश की नई धाराओं ने राजस्थान को नया आत्मविश्वास प्रदान किया है।

प्रधानमंत्री की गरिमामयी उपस्थिति 'विकसित राजस्थान' के संकल्प को सदैव नई शक्ति, नई प्रेरणा और नया आत्मविश्वास देती है। राष्ट्रीय नेतृत्व और राज्य सरकार की प्रतिबद्धता के एक साथ आगे बढ़ने से विकास की गति दोगुनी हो रही है। यही डबल इंजन मॉडल की सार्थकता है। अजमेर से उठने वाली विकास की गूंज धरातल पर परिणामों में परिवर्तित होगी।

–अरुण चतुर्वेदी,
अध्यक्ष, राजस्थान वित्त आयोग

विज्ञान उत्सव और विकसित भारत के सम्मुख यक्ष प्रश्न

प्रो. अशोक कुमार

28 फरवरी को भारत में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन महान भारतीय भौतिक विज्ञानी सर सी.वी. रमन द्वारा रमन प्रभाव की खोज की स्मृति में समर्पित है, जिसके लिए उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वर्ष 2026 के लिए इस अवसर पर राजस्थान में विशेष आयोजन किए जा रहे हैं ! वर्तमान में राजस्थान का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग विज्ञान उत्सव के माध्यम से प्रदेश में वैज्ञानिक चेतना जागृत करने का सराहनीय प्रयास कर रहा है। साथ ही, एक नई स्टेट साइंस एकेडमी की प्रस्तावित योजना भी चर्चा में है, जिसका ध्येय विकसित भारत 2047 के विजन को साकार करना है। हम सभी इन पहलों का स्वागत करते हैं, परंतु साथ ही एक अत्यंत गंभीर और मौलिक प्रश्न भी है –विज्ञान में वास्तविक शोध कौन करेगा?

जब हम 'विकसित भारत' की बात करते हैं, तो हमारा अर्थ केवल आर्थिक प्रगति नहीं, बल्कि वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता भी होता है। लेकिन क्या केवल भव्य आयोजनों, सम्मेलनों और कागजी योजनाओं से शोध संभव है? हकीकत यह है कि हमारे अधिकांश महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में न तो आधुनिक प्रयोगशालाएँ हैं, न पर्याप्त उपकरण और न ही शिक्षकों की उपलब्धता। बुनियादी ढांचे और मानव संसाधन के इस अभाव में शोध का सपना केवल एक मृगतृष्णा बनकर रह सकता है।

चुनौती संख्या 1 : शिक्षकों का अभाव और शोध की निरंतरता

शोध केवल प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि एक प्रबुद्ध मस्तिष्क के मार्गदर्शन में फलीभूत होता है। दुर्भाग्यवश, राजस्थान के उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के सैकड़ों पद रिक्त हैं। बिना स्थाई मेंटोर के छात्र शोध की दिशा तय नहीं कर सकते। वर्तमान में एड-हॉक या गेस्ट फैकल्टी के भरोसे शिक्षण कार्य तो चल सकता है, लेकिन दीर्घकालिक शोध परियोजनाएं संभव नहीं हैं। शोध के लिए एक निरंतरता और समर्पण की आवश्यकता होती है, जो केवल स्थाई और सुरक्षित शैक्षिणक वातावरण में ही मिल सकती है।

चुनौती संख्या 2: आधुनिक प्रयोगशालाओं और उपकरणों का अकाल

आज का विज्ञान अल्ट्रा-मॉडर्न उपकरणों का युग है। नैनोटेक्नोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी और एआई आधारित शोध के लिए जिन उपकरणों की आवश्यकता है, वे हमारे अधिकांश राज्य विश्वविद्यालयों की पहुंच से बाहर हैं। कई महाविद्यालयों में तो बुनियादी केमिकल्स और कांच के सामान तक का बजट समय पर नहीं मिल पाता। ऐसे में हम विश्व स्तरीय शोध की प्रतिस्पर्धा में पिछड़ रहे हैं।

समाधान की राह: पाँच सूत्रीय सुधारात्मक रणनीति

इस संकट से उबरने और विज्ञान उत्सव की सार्थकता सिद्ध करने के लिए हमें निम्नलिखित पाँच क्षेत्रों में युद्धस्तर पर कार्य करना होगा:–

1. क्लस्टर मॉडल और संसाधन साझाकरण

हर महाविद्यालय में करोड़ों रुपये की लैब बनाना आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। अत: हमें 'हब और स्पोक' मॉडल को अपनाना चाहिए। राज्य के चुनिंदा विश्वविद्यालयों या प्रस्तावित साइंस एकेडमी को सेंट्रल हब के रूप में विकसित किया जाए, जहाँ अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध हों। आस-पास के सभी छोटे महाविद्यालयों को इस हब से जोड़ा जाए, ताकि उनके छात्र और शोधकर्ता एक निश्चित समय-सारणी के अनुसार इन सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

2. रिक्त पदों पर तत्काल और स्थाई नियुक्तियाँ

सरकार को शोध की गुणवत्ता सुधारने के लिए विश्वविद्यालयों में रिक्त पड़े संकाय पदों को प्राथमिकता पर भरना होगा। चयन प्रक्रिया पारदर्शी और योग्यता आधारित होनी चाहिए। साथ ही, युवा शोधकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप की संख्या बढ़ानी होगी, ताकि मेधावी छात्र विदेश जाने के बजाय अपने राज्य में योगदान दें।

3. लैब-ऑन-व्हील्स और डिजिटल नवाचार

राजस्थान की भौगोलिक विविधता को देखते हुए लैब-ऑन-व्हील्स (चलता-फिरता विज्ञान केंद्र) एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। यह वैन ठामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयों तक पहुंचकर छात्रों को प्रायोगिक ज्ञान दे सकती है। इसके अलावा, वर्चुअल लैब का विस्तार किया जाना चाहिए।

आई आई टी दिल्ली और अन्य केंद्रीय संस्थानों के सहयोग से वर्चुअल सिमुलेशन के जरिए छात्र उन प्रयोगों को भी सीख सकते हैं जिनके उपकरण भौतिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं।

4. उद्योग-अकादमिक साझेदारी

विज्ञान और उद्योग को एक-दूसरे का पूरक बनना होगा। सरकार को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए जिससे निजी उद्योग अपने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर), फंड का उपयोग सरकारी महाविद्यालयों की प्रयोगशालाओं को गोद लेने में करें। इससे दो लाभ होंगे: उद्योगों को उनकी आवश्यकता के अनुसार कुशल वर्कफोर्स मिलेगा और कॉलेजों को अत्याधुनिक लैब और फंडिंग।

5. शोध बजट की स्वायत्तता और प्रशासनिक सुधार

विज्ञान का बजट केवल उत्सवों और आयोजनों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। बजट का एक बड़ा हिस्सा प्रयोगशालाओं के केमिकल, किट्स आदि के लिए आरक्षित हो। वर्तमान में शोधकर्ताओं को एक छोटा उपकरण खरीदने के लिए भी लंबी प्रशासनिक प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। इस रेड-टेपिज्म को खत्म कर शोधकर्ताओं को वित्तीय स्वायत्तता देनी होगी।

निष्कर्ष: इवेंट मैनेजमेंट से टैलेंट मैनेजमेंट की ओर

'विकसित भारत' के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें अपनी प्राथमिकताएं बदलनी होंगी। विज्ञान उत्सव जन-जागरूकता के लिए अच्छे हैं, लेकिन वैज्ञानिक क्रांति के लिए हमें इन्वेंटरी मैनेजमेंट (उपकरणों की उपलब्धता) और टैलेंट मैनेजमेंट (शिक्षकों की नियुक्ति) पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

जब तक हमारे पास सुसज्जित प्रयोगशालाएँ और समर्पित शिक्षक नहीं होंगे, तब तक शोध केवल एक प्रशासनिक औपचारिकता बनकर रह जाएगा। यदि हम चाहते हैं कि राजस्थान का युवा नोबेल पुरस्कार या बड़े आविष्कारों का सपना देखे, तो हमें उसे केवल उत्सवों का दर्शक नहीं, बल्कि प्रयोगशालाओं का सक्रिय शोधकर्ता बनाना होगा। अब समय आ गया है कि हम कागजी योजनाओं से बाहर निकलकर धरातल पर विज्ञान की नींव मज़बूत करें। तभी सही मायनों में राजस्थान और भारत विज्ञान के शिखर पर पहुंच पाएंगे।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय,
विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

उदयपुर के मेनार में 451 साल से खेली जा रही है पटाखों और बारूद की ऐतिहासिक होली

- **होली के बाद चार मार्च को ''जमराबीज'' पर जीवंत होगा रणभूमि का नजारा, सैनिक छावनी जैसा होगा माहौल**
- **आसपास के गांवों सहित उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, निंबाहेड़ा, मालवा और मध्यप्रदेश के हजारों लोग कार्यक्रम के साक्षी बनेंगे**

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर जिले के मेनार की ऐतिहासिक पटाखों और बारूद की होली इस वर्ष चार मार्च को धूमधाम से खेली जाएगी। होली के बाद मनाए जाने वाला ''जमराबीज'' इस बार चार मार्च को मनाया जाएगा, जिसमें आसपास के गांवों सहित मेवाड़ के उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, निंबाहेड़ा, मालवा और मध्यप्रदेश के हजारों लोग साक्षी बनेंगे। मेनार प्राचीन ठाकुरजी मंदिर ओंकारेश्वर चौक में मनाए जाने वाले पर्व की तैयारियों की जा रही है।

ग्रामीण पारंपरिक वेशभूषा धोती-कुर्ता और पगड़ी पहने ग्रामीणों की टोलियां, गरजती तोपें, लहराती बंदूकें, हाथों में तलवारें और आसमान को रोशन करती भव्य आतिशबाजी पूरे माहौल को रोमांच से भर देती है। इस अनूठी परंपरा को देखने के लिए दूर-दराज क्षेत्रों सहित मध्यप्रदेश से भी बड़ी संख्या में लोग पहुंचते हैं। आधी रात होते ही ओंकारेश्वर चौक मानो रणभूमि में तब्दील हो जाता है। करीब 451 साल पहले मुगल चौकी ध्वस्त करने की खुशी में यहां मेनारिया समाज बारूद की होली खेल रहा है।

गांव के बुजुर्ग बताते है कि यह प्रसंग महाराणा अमर सिंह प्रथम के समय की एक ऐतिहासिक घटना से जुड़ा है। 1576 में हुए हल्दीघाटी युद्ध के बाद मेवाड़ के जन मानस में राष्ट्रभक्ति की ऐसी लहर उठी कि हर गांव मुगल शासकों के खिलाफ उठ खड़ा हुआ था। जगह-जगह मुगलों की चौकियां नष्ट की जाने लगी। मुगलों की एक मुख्य चौकी ऊंटाला वल्लभगढ़ (वर्तमान वल्लभनगर) में स्थापित थी, जिसकी उप चौकी इसी मेनार गांव में थी। महाराणा प्रताप के निधन के बाद मुगलों के आतंक से त्रस्त होकर मेनार के मेनारिया ब्राह्मणों ने मुगल सेना को हटाने की रणनीति बनाई। एक दिन समाज के पंचों ने गोपनीय बैठक बुलाकर इस चौकी को नष्ट करने की योजना तैयार की। करीब साढे चार सौ साल पहले होली के दूसरे दिन जमराबीज पर मेनारिया वीरों ने मुगलों पर हमला कर दिया। विक्रम संवत 1657 (सन् 1600) चैत्र सुदी द्वितीया को मुगलों की चौकी नष्ट कर दी। तब उस समय महाराणा अमर सिंह ने मेनार के मेनारिया ब्राह्मणों को शाही लाल जाजम, रणबांकुरा ढोल, सिर पर कलंकी धारण, ठाकुर की पदवी और मेवाड़ की 17वीं उमराव की उपाधि दी। साथ ही आजादी तक गांव की 52 हजार बीघा जमीन पर लगान नहीं वसूलने की घोषणा की। ओंकार महाराज के चबूतरे से शुरु हुई लड़ाई छावनी तक पहुंच गई और मुगलों को मार गिराया। ऐसे मेवाड़ को मुगलों के आतंक से बचाया था। करीब 451 साल पहले मुगल चौकी ध्वस्त करने की खुशी में यहां मेनारिया समाज बारूद की होली खेल रहा है। युवाओं, बुजुर्गों की ओर से एक से बढ़कर एक हैरतअंगेज जोशीले अंदाज में दोनों हाथों में तलवारें लेकर घुमाई जाती है और आग के गोटे को घुमाते हैं। इस आयोजन को लेकर शाम को पांच बजे से आठ बजे तक घरों में कई प्रकार के व्यंजन बनाए जाते है और मेहमानबाजी होती है।

अजमेर मंडल के रेल सेवा पुरस्कार समारोह में अधिकारी-कर्मचारी सम्मानित

अजमेर, (कासं)। उत्तर-पश्चिम रेलवे के अजमेर मंडल पर 69वां एवं 70वां संयुक्त रेल सेवा पुरस्कार समारोह 27 फरवरी को रेलवे ऑफिसर्स क्लब, कचहरी रोड में आयोजित किया गया। समारोह में मंडल रेल प्रबंधक राजू भूतड़ा ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

मंडल रेल प्रबंधक राजू भूतड़ा ने कहा कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मेहनत और कार्यकुशलता के कारण अजमेर मंडल को रेलवे बोर्ड स्तर पर आबूरोड रनिंग रूम के लिए सर्वश्रेष्ठ रनिंग रूम ढाल तथा मुख्यालय स्तर पर पांच ढाल प्राप्त हुई हैं। उन्होंने मुख्यालय स्तर पर महाप्रबंधक पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों को बधाई देते हुए भविष्य में भी उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा दी। समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नृत्य एवं गीतों की आकर्षक प्रस्तुतियां दी गई। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक विकास बूरा, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी रघुवीर सिंह चारण सहित विभिन्न शाखाओं के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। अंत में सहायक कार्मिक अधिकारी वंदना चौबे ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुरस्कार विजेताओं में मोहित सैनी, राजेश कुमावत, गौरव मिलक, राहुल भारद्वाज, ताराचंद, सुरेंद्र सोनी, जोताराम देवासी, नीरज कुमार सैनी, ओमवीर सिंह, राजेश कुमार सोनी, तरुणा पाठक, सुनील कुमार मिश्रा, रामजीलाल सैनी, मनीष शर्मा, जगदीश अरोड़ा, अनिल, धर्मेंद्र, एंथोनी जोसेफ, भारती शर्मा, निजामुद्दीन खान, गरिमा सहित लेखा, अभियांत्रिकी, वाणिज्य, विद्युत, चिकित्सा, यांत्रिक, परिचालन, कार्मिक, सामान्य प्रशासन, सुरक्षा, संकेत एवं दूरसंचार तथा स्काउट गाइड के कुल 68 अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल रहे।